प्रथम अध्याय

सूर्यबाला: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सूर्यबाला: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1 1 *व्यक्तित्व*

1 1 1 जीवन परिचय - जन्म तथा बचपन, माता-पिता, शिक्षा-दीक्षा, परिवार, अर्थोपार्जन।

1 1 2. व्यक्तित्व - बाह्य, आंतरिक - मिलनसार वृत्ति, संवेदनशीलता, भावुकता, आदरातिथ्य, हँसमुख, रूचियाँ।

1 1.3 साहित्यिक प्रेरणाएँ।

1 1 4 पुरस्कार।

1 1 5 यात्राएँ।

1 2 *कृतित्व।*

1 2 1 उपन्यास - मेरे संधिपत्र, सुबह के इंतजार तक, दीक्षांत, अग्निपंखी।

1 2 2 कहानी संग्रह - एक इंद्रधनुष जुबैदा के नाम, दिशाहीन, थाली भर चाँद, मुंडेर पर, यामिनी कथा, गृहप्रवेश, साँझवाती।

1 2 3. व्यंग्य संग्रह - अजगर करे न चाकरी, अगली सदी का शोध पत्र।

1 2 4. अन्य साहित्य।

निष्कर्ष।

सूर्यबाला: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

किसी भी साहित्यिक के सही-सही मूल्यांकन के लिए साहित्यकार के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का अध्ययन आवश्यक है। मानव-जीवन की उपलब्धियों में उसके व्यक्तित्व का प्रमुख योग होता है और व्यक्तित्व जीवन से अनुभूतिपूर्ण सामग्री लेकर फलता-फूलता है। इस प्रकार व्यक्तित्व और जीवन दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। साहित्यकार अपने समय की परिस्थितियॉ एवं यथार्थ से प्रेरित होकर ही सार्थक साहित्य का सृजन करता है। व्यक्ति जन्म से ही प्रतिभाशाली होते हैं, जो अपनी प्रतिभा को क्रियाशील बनाकर महान बन जाते हैं। व्यक्ति अपने जीवन की अनुभूतियों को अर्जित करते-करते महान बन जाते हैं। दोनों का भी अपने जीवन के प्रति दृष्टिकोण उदात्त रहता है और उदात्त जीवन और व्यक्तित्व का यह घनिष्ठ बंधन साहित्य जगत में तो स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। ग्रीक विद्वान लोंजाइनस ने कहा है, ''साहित्यकार के आत्मतत्व की महानता का प्रतिबिंब ही साहित्य का औदात्त है।''[1] अत. साहित्यिक कला कृति के वस्तुपरक मूल्यांकन के लिए उसकी परिस्थितियाँ, अनुभवों, प्रेरणाओं और विचारों आदि का विश्लेषण करना आवश्यक है। मनुष्य अपने आपको पहचान नहीं पाता वहॉ किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति के व्यक्तित्व का चित्रण करना असंभव होता है।

सूर्यबाला: व्यक्तित्व - कृतित्व -

साठोत्तर काल की महिला साहित्यकारों में प्रमुखतम स्थान प्राप्त करनेवाली सूर्यबाला एक है। सूर्यबाला आधुनिकता से युक्त साहित्य लिखनेवाली महिला साहित्यकार है। स्वयं नारी होने के कारण उनके साहित्य में नारी समस्याओं का अंकन अधिक दिखाई देता है। सूर्यबाला ने नारी के मन के अनेक पहलुओं को उजागर किया है। सूर्यबाला ने अन्य महिला साहित्यकारों की तरह अन्य विधाओं में भी साहित्य रचना की है, परंतु इन सबसे अलग एक महत्त्वपूर्ण शैली उन्होंने चुनी और वह है व्यंग्य शैली। इस शैली से समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं पर करारी चोट की है। समाज की विडंबनाओं को एक अलग दृष्टि से देखा और उसे अपने एक खास अंदाज में व्यक्त किया।

सूर्यबाला को मुख्य रूप से कहानीकार के नाते जाना जाता है। उन्होंने अलग-अलग विषयों को लेकर कहानियॉ लिखी हैं। उन्होंने कभी अपने अनुभवों के आधार पर कहानियाँ लिखी तो कभी परिवेश से

उपजे हुए कथानकों को चुना। इसी कारण उनकी सभी कहानियॉ यथार्थ से उपजी मानी जाती हैं। इन कहानियों में पाई जानेवाली अनेकानेक विशेषताओं को देखने से पहले सूर्यबाला के व्यक्तित्व और कृतित्व को परखना अत्यंत आवश्यक है। किसी के जीवन परिवेश आदि के बारे में सही जानकारी हासिल करने के लिए, उनके साहित्य को सही-सही रूप में जानने के लिए व्यक्तित्व और कृतित्व को जानना आवश्यक है। वैसे भी हर एक संवेदनशील साहित्यकार अपने परिवेश एवं परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। इसलिए सूर्यबाला के समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व को देखना आवश्यक हो जाता है।

1.1 व्यक्तित्व -

1.1.1 जीवन परिचय -

जन्म तथा बचपन -

सूर्यबाला का जन्म 22 अक्तूबर, 1944 को वाराणसी में मिर्जापुर में हुआ। वे कायस्थ परिवार में जन्मी। उनका पूरा नाम सूर्यबाला वीरप्रसादसिंह श्रीवास्तव है। उनका बचपन अत्यंत लाड-प्यार में बीता। उनका परिवार सधन था। इसी कारण उन्हें किसी के आगे मोहताज नहीं होना पडा। उनका पूरा बचपन वाराणसी के धार्मिक पवित्र क्षेत्र में बीता है।

माता - पिता -

सूर्यबाला के पिता डिस्ट्रीक्ट इनस्पेक्टर थे। उनका नाम वीरप्रतापसिंह श्रीवास्तव था। सूर्यबाला के माता का नाम केशरकुमारी था। वह उर्दू और हिंदी की अध्येता थी। उनमें कलात्मक और साहित्यिक रूचियॉ थी। इसी के साथ ही उनकी मॉ कतरब्योंत करना अच्छी तरह जानती थी। इसीलिए उन्होंने अपनी चारों बेटियों को एम् ए, पीएच् डी तक की शिक्षा दी। सूर्यबाला के पिता शेरो-शायरी भी किया करते थे। सूर्यबाला की चार बहने थी। उनमें से एक वीरबाला जी प्रसिद्ध साहित्यकार रही हैं।

शिक्षा-दीक्षा -

सूर्यबाला की आरंभिक शिक्षा-वाराणसी में हुई वही से रीतिकाव्य पर पीएच् डी की। विद्यार्थी

रूप में वह एक बुद्धिमान लडकी थी। इस तरह उनकी पूरी शिक्षा वाराणसी जैसे पवित्र स्थान पर हुई है।

परिवार -

सूर्यबाला की शादी श्री. आर के लाल के साथ हुई। वे पहले सिंधिया स्टील नेव्हीगेशन में इंजिनिअर थे। बाद में उन्होंने ग्लैक्सो लैबोरेटरीज थाना में इजिनिअरिंग मैनेजर के रूप में काम करना शुरू किया और अब वे सेवानिवृत्त हो चुके हैं। सूर्यबाला के पति एक मेहनत कश और परिश्रमी इंसान हैं। उन्होंने सूर्यबाला को निरंतर प्रोत्साहित किया।

सूर्यबाला के दो बेटे और एक बेटी है। उनके बडे बेटे का नाम अभिलाष है, वह हाँगकॉग में कंम्प्युटर का काम कर रहा है। इससे पहले उसने अमरिका में इंजिनिअरिंग पूरी की है। उनके दूसरे बेटे का नाम अनुराग है। उनकी बेटी दिव्या बायोकेमिस्ट्री में पीएच् डी कर चुकी है। आज उनका परिवार एक संपन्न और सुखी परिवार है।

अर्थोपार्जन -

सूर्यबाला ने आरंभिक दिनों में बनारस विश्वविद्यालय, डिग्री कॉलेज में नौकरी की थी। जैसे ही उनके पति को ग्लैक्सों में नौकरी मिली उन्होंने पारिवारिक जिम्मेदारियों को संभालने के लिए नौकरी छोड दी। आजकल वह गृहिणी की जिम्मेदारियॉ सॅभालते हुए साहित्य लेखन करती है।

1.1.2 व्यक्तित्व -

बाह्य व्यक्तित्व -

श्रीमती सूर्यबाला एक आदर्श भारतीय नारी है। औसत कद, गोरा रंग, लंबा चेहरा, माथे पर बडी बिंदी, सीधी-साधी साडी, सॅवरे बाल और प्रसन्न चेहरा यह उनका बाह्य व्यक्तित्व है।

आंतरिक व्यक्तित्व -

सूर्यबाला का आंतरिक व्यक्तित्व भी बाह्य व्यक्तित्व की तरह आकर्षक है। वह देखने में प्रसन्नचित्त दिखाई देती है। उनके आंतरिक व्यक्तित्व में निम्नलिखित विशेषताएँ दिखाई देती हैं -

मिलनसार वृत्ति -

सूर्यबाला में अभिमान की भावना दिखाई नहीं देती है। हर किसी के साथ खुले दिल से मिलती है। उन्हें हर किसी से मिल-जुलकर सुख-संवाद करने में आनंद मिलता है। सूर्यबाला उनके सुख-दुख की सहभागी बनती हैं। इससे उन्हें साहित्य सृजन के लिए नए कथानक मिल जाते हैं।

संवेदनशीलता -

सूर्यबाला संवेदनशील लेखिका है। इसी से प्राप्त हर अनुभवों को लेकर उन्होंने साहित्य लेखन किया है। साहित्य के प्रारंभ में उन्होंने इस बात को स्वीकार भी किया है कि यह उनका अपना अनुभव है। उनकी कहानियों में बताए गए सारे अनुभव उन्होंने आत्मकथात्मक शैली में ही लिखे हैं। दिशाहीन, यामिन कथा इन कहानियों का उनका अपना अनुभव है। इसलिए हम सूर्यबाला को संवेदनशील नारी कहते हैं।

भावुकता -

सूर्यबाला संवेदनशील है, उसी तरह वह भावुक भी है। उनकी भावुकता का परिचय भी उनकी कहानियों में मिल जाता है। जैसे उनकी कहानियॉ 'सुखांत की कहानी' और 'रहम दिल' यह उनका अपना अनुभव है। इन दोनों कहानियों में उनकी भावुकता का परिचय मिलता है।

आदरातिथ्य -

प्राचीन उक्ति 'अतिथि देवो भव' की तरह सूर्यबाला अतिथ्यशील नारी है। वह घर में आनेवाले व्यक्ति से प्रसन्न मुख से बातचीत करती है। उसे खाली हाथ नहीं भेजती और किसी को वह बाहर देर तक इंतजार करने के लिए नहीं बिठाती है। मेहमाननवाजी में सूर्यबाला को प्रसन्नता प्राप्त होती है।

हॅसमुख -

चाहे जितना भी काम हो सूर्यबाला चेहरे से सदैव हँसमुख रहती है। कोई मिलने जाता है तब वह प्रसन्नचित्त होकर उसके सामने जाती है। वह किसी को बहाने से नहीं टालती है। इसी कारण हर कोई उनसे

प्रभावित रहता है। पारिवारिक जिम्मेदारियॉ कुशलता से निभाते हुए वह अपने साहित्य को उचित न्याय देती है।

इस प्रकार सूर्यबाला शांत, सौम्य दिखाई देती है।

रूचियॉ -

जाति से कायस्थ होने के बावजूद भी सूर्यबाला शुद्ध शाकाहारी है। उन्हें मध्यम आहार पसंद है। उनकी महत्त्वपूर्ण रूचियॉ हैं - पढना, शास्त्रीय संगीत सुनना, शास्त्रीय नृत्य देखना, नाटक देखना आदि। लेकिन इसके साथ ही उन्हें अपने लोगों के साथ बैठकर उनके सुख-दुख के बारे में बातें करना पसंद है और इसके साथ ही बूढे लोगों के साथ बातचीत कर उन्हें समझ लेना भी अच्छा लगता है।

1.1.3 साहित्यिक प्रेरणा -

सूर्यबाला का मानना है कि कोई भी लेखक किसी एक वस्तु या घटना से प्रेरणा प्राप्त नहीं करता। उसकी रूचि बचपन से ही विकसित हो जाती है। सूर्यबाला छटी कक्षा से साहित्य लिखती है। इसके लिए उन्हें संपर्क में आनेवाले लोगों ने, आसपास घटित होनेवाली घटनाओं ने प्रेरित किया। सबसे अधिक प्रेरणा घर से ही प्राप्त हुई। बचपन का माहौल, घर में ढेर सारी किताबें, पिताजी द्वारा की जानेवाली शेरो-शायरी, मॉ की कलात्मक और साहित्यिक रूचियॉ आदि से सूर्यबाला को साहित्यिक प्रेरणा मिली है। उसके साथ-साथ उनकी बहन वीरबाला ने उन्हें अधिक प्रेरित किया जो स्वयं एक साहित्यकार हैं। उन्होंने सूर्यबाला को प्रेमचंद और सुदर्शन की कहानियॉ बताई जिससे सूर्यबाला की रूचि साहित्य की ओर अधिक बढ गई। डॉ मधु संधु का कहना है, ''सूर्यबाला के साहित्यिक जीवन पर पिता की कवि प्रवृत्ति तथा बहनों के संगीत, साहित्य प्रेम का विशेष प्रभाव पड़ा।''[2]

सूर्यबाला की प्रथम कहानी 'जीजी' अक्तूबर 1972 में 'सारिका' पत्रिका में प्रकाशित हुई। धर्मयुग पत्रिका में 'दीक्षांत' उपन्यास प्रकाशित हुआ। 'मेरे संधिपत्र' रेडिओ और दूरदर्शन द्वारा प्रसारित हुआ है।

1 1.4 पुरस्कार -

सूर्यबाला को उनकी साहित्य कृतियों के लिए, साहित्यिक योगदान के लिए कई बार पुरस्कृत एव सम्मानित किया गया है।

1 सितंबर 1996 में सूर्यबाला को 'प्रियदर्शनी पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया।

2. सूर्यबाला की कृति 'कात्यायनी' संवाद के लिए उन्हें धनश्यामदास सराफ पुरस्कार मिला है।

3 नागरी प्रचारिणी सभा, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मुंबई विश्वविद्यालय आरोही संस्था, राष्ट्रीय कायस्थ सभा आदि के द्वारा उन्हें समय-समय पर सम्मानित किया जा चुका है।

1.1.5. यात्राएँ -

सूर्यबाला अपने पति श्री आर. के लाल के साथ विदेश भ्रमण कर चुकी है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पारिवारिक सधनता, परिवेश, घटित घटनाएँ आदि के द्वारा प्रेरणा सूर्यबाला को मिली है। इस प्रेरणा से सूर्यबाला आज उचित सम्मान को प्राप्त कर सिद्धहस्त लेखिकाओं की पंक्ति में जा बैठी है।

1 2 कृतित्व -

सूर्यबाला के व्यक्तित्व के पहलूओं से प्रेरणा प्राप्त कर सूर्यबाला ने जो साहित्य रचना की उसका संक्षेप में परिचय प्राप्त करना आवश्यक है। तभी हम उनके व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर होनेवाले प्रभाव का सही मूल्यांकन करन सकेंगे। उन्होंने अपने साहित्य का आरंभ छटी कक्षा में कविता से किया है। वह मानती है कि तब उन्हें ठीक से लिखना नहीं आता था। और इसी कारण उनकी यह कविता तुकबंदी ही बन गई। उसके पश्चात उनकी प्रथम कहानी 'जीजी' सन 1972 में सारिका पत्रिका में छपी और मार्च 1973 में उनका पहला व्यंग्य लेख 'अभिवाज्य' धर्मयुग पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। प्राय सभी प्रतिष्ठित एवं स्तरीय पत्रपत्रिकाओं में उनका साहित्य प्रकाशित हुआ है। 'रेस' कहानी का दूरदर्शन द्वारा नाट्य रूपांतरण हुआ है। उनकी समग्र

रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

1.2.1 उपन्यास -

सूर्यबाला के साहित्यिक रचनाक्रम में उनके उपन्यास अत्यंत महत्त्वपूर्ण साबित हुए हैं। उन्होंने चार उपन्यास लिखे - 'मेरे संधिपत्र', 'सुबह के इंतजार तक', 'अग्निपंखी', 'दीक्षांत'। सूर्यबाला के इन चार उपन्यासों का परिचय संक्षेप में निम्नप्रकार हैं -

मेरे संधिपत्र -

सन् 1977 में प्रकाशित है। 'मेरे संधिपत्र' में नायिका शिवा के व्यक्तित्व को केंद्र में रख गया है। उसका विवाह एक संपन्न रायजदा से होता है। इस उपन्यास में शिवा का त्याग, उसकी शिष्टता एवं निरीहता का अंकन हुआ है। उच्चवर्गीय परिवार में द्वितीय मॉ बनकर शिवा आती है, जहाँ उसे तीन पुत्रियॉ विरासत में मिलती है। उसे कदम-कदम पर समझौते करने पडते हैं। शिवा के खालीपन और अकेलेपन को गहराने के लिए रिंकी, ऋचा और रत्ना पूरा प्रयत्न करती है, लेकिन वह निपट अकेली रह जाती है। पति-पत्नी के संबंधों में तनाव की स्थिति बनी रहती है। इस उपन्यास में पिता और पुत्रियों में दो पीढियों के अंतर को भी अंकित किया गया है। शिवा की दृष्टि में जीवन संधियों का एक अटूट सिलसिला है। उसे हर कदम पर समझौता करना पडता है। तीन पुत्रियों की यह सौतेली मॉ विधवा हो जाती है और उसका घुटन-भरा जीवन उसे कचोटता है। अंत में उसका हिम-पिंड पिघलने लगता है और वह नया जीवन जीने के लिए छटपटाने लगती है। पुत्रियों के चले जाने पर वह रत्नेश को अपने आपको समर्पित अवश्य करती है किंतु विवाह नहीं करती और अपनी कोठी में अकेली रह जाती है। डॉ सरिताकुमार इस उपन्यास के बारे में कहती है - ''उपन्यास का अंत विचित्र रूप में किया गया है - पति घर से बाहर चला जाता है और पत्नी ममता के बंधनों को तोडकर अकेली खडी रह जाती है। सूर्यबाला ने घरेलू धरातल पर पापा, मम्मी, अंकल और लडकियों के माध्यम से परंपरा और आधुनिकता में द्वंद्व की स्थिति को उजागर करने का प्रयत्न किया है कि किस तरह घर के कडे अनुशासन में प्रेम कुंठित होने की साक्षी देता है।''[3]

सुबह के इंतजार तक -

सन् 1980 में प्रकाशित 'सुबह के इंतजार तक' उपन्यास में परिस्थितिजन्य दुर्घटनाओं के बीच

एक नारी की करूणाभरी गाथा है। स्वावलंबन, जिजीविषा और अनवरत अथक परिश्रम की स्थिति से युक्त मानू की कथा न जाने कितनी किशोरियों की कथा है।

आज का मध्यवर्ग दु खी है, अभिशप्त है। किंतु इस मध्यवर्ग में जो पारंपारिक रूप से कुलीन हैं, वे अपने अभावों की छाया भी किसी पर नहीं पडने देते हैं। डॉ. शीलप्रभा वर्मा जी का कहना है - ''सूर्यबाला जी ने शैली में सरसता, अभिव्यक्ति में नवीनता, तादात्म्य की सीमा रेखाओं को स्पर्श करते हुए सभी में एक प्रकार का नया तेवर लेकर उपन्यास जगत में कदम रखा है। अनेक पात्र गार्हस्थ और दांपत्य जीवन की सीमा रेखाओं के बीच घूमते है।''[4]

दीक्षांत -

सूर्यबाला का 'दीक्षांत' उपन्यास 1992 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास में शिक्षा क्षेत्र को अपना केंद्रीय विषय बनाया है। शिक्षा क्षेत्र में जो भ्रष्टाचार है उसे अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। समीक्षक डॉ मदनमोहन तरूण कहते हैं - ''शिक्षण संस्थाओं में शिक्षेतर शक्तियों के निरंतर बढते प्रभाव, अन्य व्यावसायिक संस्थानों जैसा ही मूल्यविरहित वातावरण, साधना, अध्यवसाय तथा उच्चादर्शो के कठिन मार्ग से जीवन का परिष्कार करते हुए एवं अनेक विषयों पर अधिकार के स्थान पर शीघ्र गति सफलता की होडा-होडी में मूल्यों एवं ज्ञानसाधना के प्रति समर्पित अध्यापकों का निरंतर घटता प्रभाव, उनके भीतर गहराती निराशा एवं वातावरण में अपनी आवश्यकता की तीव्रानुभूति ही इस उपन्यास का मुख्य विषय है। 'दीक्षांत' की मर्मस्पर्शी यातना-कथा स्वाधीन संग्राम के त्याग एवं कर्तव्यों के प्रति। निष्काम समर्पण के मूल्यों से प्रेरित एक ग्रामीण विद्यालय के आदर्शनिष्ठ अध्यापक शर्मा के माध्यम से कही गयी है।''[5] इस तरह शिक्षा क्षेत्र पर करारी चोट की है।

अग्निपंखी -

यह उपन्यास 1984 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास में भारतीय विधवा नारी की अभिशप्त जीवन कहानी है। भारतीय विधवा नारियों की समस्याओं का चित्रण इस उपन्यास में लेखिका ने किया है। उसी प्रकार आज के युवक जो नौकरी, शिक्षा पाने के बाद आत्मकेंद्रित बन जाते हैं उनका भी चित्रण इस उपन्यास में

किया है। इस उपन्यास में मॉ का बेटे के प्रति असीम प्यार है। परंतु मॉ और बेटे में झगडा बढ जाता है और मॉ पर आघात होता है। इसका चित्रण है।

सूर्यबाला के चारों उपन्यास सामाजिक है। सामाजिक समस्याओं का चित्रण इन उपन्यासों में हुआ है।

1.2.2 कहानी संग्रह -

सूर्यबाला ने सात कहानी संग्रह लिखे हैं - (1) एक इंद्रधनुष जुबैदा के नाम, (2) दिशाहीन, (3) थाली भर चॉद, (4) मुंडेर पर, (5) यामिनी कथा, (6) गृहप्रवेश, (7) साँझवाती आदि। इन कहानी संग्रहों का संक्षिप्त परिचय निम्नप्रकार है -

एक इंद्रधनुष जुबैदा के नाम -

इस संग्रह में नौ कहानियों को संग्रहित किया गया है। कहानी की भाषा, शिल्प और कथ्य में विविधता है, लेकिन वैचारिक धरातल एक ही है। समस्त कहानियों में संबंधों का खोखलापन है और स्वार्थ के संकीर्ण दायरों का लेखा-जोखा है। पारिवारिक, सामाजिक स्तर पर निहित विषमताओं एवं विडंबनाओं का उद्‌घाटन करती हुई ये कहानियॉ वर्तमान परिवेश में टूटते हुए जीवनमूल्यों की चर्चा करती हैं।

दिशाहीन -

'दीशाहीन' में एक ही कहानी पूरे ग्यारह भागों में बॅटी हुई है। इस कहानी में सामान्य कस्बे का युवक महानगर में आकर असफल तथा कुंठित होता है यही चित्रण है।

थाली भर चाँद -

सन् 1988 में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में कुल 16 कहानियॉ संकलित हैं। लेखिका ने इस संग्रह के प्रारंभ में प्रस्तावना के रूप में अपना विचार प्रकट किया है। अधिकतर कहानियॉ नारी जीवन से संबंधित हैं।

मुंडेर पर -

सन् 1990 में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में दस कहानियाँ संकलित हैं। इस संग्रह में सूर्यबाला पारिवारिक जीवन से थोडा-सा बाहर आई हुई दिखाई देती है। उन्होंने गैस, मुक्तिपर्व जैसी कहानियॉ लिखी। फिर भी वह पूरी तरह से पारिवारिक माहौल से अलग नहीं हो पाई।

यामिनी कथा -

सन् 1991 में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में सिर्फ तीन ही कहानियाँ संकलित हैं। 'यामिनी कथा' यह कहानी लघु उपन्यास के समान है। तीनों कहानियॉ पारिवारिक माहौल को प्रदर्शित करती हैं। परंतु तीनों का वातावरण अलग-अलग है।

गृहप्रवेश -

यह सन् 1992 में प्रकाशित कहानी संग्रह है। यह कहानी संग्रह सबसे अलग है। इसमें 11 कहानियॉ संकलित हैं। इन कहानियों में विघटन, आतंक और हताशा के बीच जी लेने की कला की प्रतिष्ठापना की गई है। साथ ही आधुनिक काल में मनुष्य के भावनात्मक रिश्ते किस प्रकार सिमटते चले आ रहे हैं, इसे अंकित किया गया है।

सॉझवाती -

सूर्यबाला का यह अंतिम कहानी संग्रह 1955 में प्रकाशित है। इस संग्रह में 11 कहानियाँ सकलित हैं। इन कहानियों में करूणा और विद्रुप की तीखी धार दिखाई देती है।

सूर्यबाला के कहानी संग्रह में संबंधों का खोखलापन, पारिवारिक माहौल दिखाई देता है।

1 2.3 व्यंग्य संग्रह -

सूर्यबाला के व्यंग्य संग्रह तीन हैं। इनमें से एक अप्राप्य है - (1) अजगर करे न चाकरी (प्रकाशित), (2) अगली सदी का शोधछात्र (प्रकाश्य), (3) कुछ अदद जाहिलों के साथ (अप्राप्य)। इनका

परिचय निम्नप्रकार है -

अजगर करे न चाकरी -

सूर्यबाला का यह बहुचर्चित व्यंग्य संकलन है। इसमें 47 रचनाएँ एकत्र हैं, जो पूर्व चर्चित हैं। लेकिन इससे प्रमुख संकलन में बासीपन और क्षणभंगुरता जैसे तत्त्व समाविष्ठ नहीं हुए हैं। इस संकलन के बारे में डा बापूराव देसाई का कहना है कि ''संकलनों में प्रस्तुत उनकी कुछ विशिष्ट रचनाएँ जो चुहल, विनोद और मीठी मसखरी से भरपूर होते हुए भी सर्वत्र धारदार व्यंग्य से तराशी हुई हैं। इन व्यंग्य रचनाओं की पैनी छुरी की मार से आज समाज और साहित्य का कोई वर्ग, कोई पक्ष बच नहीं पाया है। तथाकथित, बुद्धिजीवियों का पूरा हुजूम विद्यार्थी और अध्यापक, नेता और अभिनेता से लेकर संयोजक, समीक्षक, संपादक और लेखक, कवि तथा पति तो खैर है ही लेकिन सबसे पहले हैं लेखिका स्वयं, पहला निशाना खुद अपने आप पर साधती हैं।''[6] डॉ देसाई का कहना सार्थक लगता है।

'अजगर करे न चाकरी' में सकलित व्यंग्यों में कला और साहित्य, फिल्म और संस्कृति, देश सेवा और पत्रकारिता, जननेता और बुद्धिजीवी, क्रिकेट और प्रेम, शिक्षा और सम्मेलन आदि की व्यापक परिक्रमा के आधार पर हिंदी के व्यंग्य लेखन का एक प्रतिमानिक जायजा उपलब्ध है।

अगली सदी का शोधपत्र -

'सूर्यबाला के व्यंग्य' लेख में श्यामसुंदर घोष ने लिखा है - ''सूर्यबाला की कहानियों में जैसे उनका व्यंग्य छिपा चला है वैसे ही उनके व्यंग्य में कहानियॉ दबे पॉव साथ चली हैं। इसलिए सूर्यबाला के व्यंग्य वैसे निखालिस व्यंग्य नहीं हैं जैसे कि हिंदी के अन्य व्यंग्यकारों के व्यंग्य हैं। उनके व्यंग्य लेखन में विविध प्रकार के पात्रों की जैसी जमघट है उसकी कल्पना आप अन्य व्यंग्यकारों के संदर्भ में नहीं कर सकते।''[7]

1 2.4 अन्य साहित्य -

'झगडा निपटारक दफ्तर' बाल हास्य उपन्यास है। उनकी अनेकानेक लेख, कहानियाँ कई पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। इसके अलावा उन्होंने स्तंभलेखन का कार्य भी किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सूर्यबाला ने सिर्फ एक विधा को नहीं चुना बल्कि एक साथ अनेक विधाओं में अपनी साहित्य रचना की है। साहित्य क्षेत्र में सूर्यबाला का नाम ऊँचा उठा है।

निष्कर्ष -

निष्कर्षत· हम कह सकते हैं कि आधुनिक काल की अग्रगण्य महिला साहित्यकार सूर्यबाल एक श्रेष्ठ साहित्यकार है। इन्होंने बचपन से साहित्य लेखन शुरू किया। आज वह सफल साहित्यकार है। बचपन में परिवार से प्रेरणा मिलने के कारण उन्होंने साहित्य लेखन के साथ-साथ शिक्षा को अपने जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है और उच्च शिक्षा प्राप्त की। परिवार के सभी सदस्यों ने उन्हें प्रेरणा दी है। इसी कारण उन्होंने अपने अनुभवों से ही साहित्य लेखन के लिए विषय चुने। अपने मन की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने कथा-साहित्य को चुना है।

अनुभव, परिस्थिति, परिवार, जीवन में घटित घटनाओं से प्रेरणा प्राप्त करके साहित्य सृजन किया है। इसलिए उनका साहित्य यथार्थ से युक्त बन चुका है। जीवन की विडंबनाओं पर खुलकर हँसने के लिए ही सूर्यबाला ने साहित्य के लिए व्यंग्य शैली अपनाई। उन्हें सफल कहानीकार के रूप में आज पहचाना जाता है। फिर उपन्यास क्षेत्र में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सामाजिक समस्याओं को उन्होंने अपने उपन्यासों के विषय बनाए हैं। इसी कारण पाठक उपन्यास की ओर आकर्षित होते हैं। जो पुरस्कार उन्हें मिल चुके वे योग्य ही है।

इस प्रकार सूर्यबाला एक संवेदनशील साहित्यकार के रूप में हमारे सामने आती है।

संदर्भ सूची

1 डॉ. मधु संधु, साठोत्तर महिला कहानीकार, पृ 104

2 वही, पृ 104

3 डॉ सरिताकुमार, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप-विकास, पृ 206

4 डॉ शीलप्रभा वर्मा, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ, पृ 40

5 सपा वि सा. विद्यालंकार, 'प्रकर', अप्रैल 1995, पृ 27

6 डॉ बापूराव देसाई, हिंदी व्यंग्य एवं व्यंग्यकार, पृ 100

7 संपा गोपाल, समीक्षा, अप्रैल 1991, पृ 46